शोध प्रस्ताव

शोध कार्य का शीर्षक :-

भारत में कृषक आन्दोलन और कृषि नीति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (2014-2024)

Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सामाजिक विज्ञान संकाय

राजनीति विज्ञान विभाग

पी. ए. टी. सत्र 2021-2022

पर्यवेक्षक

रवीन्द्र कुमार ठाकुर

एसो. प्रो. राजनीति वि. विभाग

एल. एन. जे. कॉलेज. झंझारपुर

शोधकर्ता

प्रभु यादव

क्रमांक – E22160142

शोध कार्य का शीर्षक :

भारत में कृषक आन्दोलन और कृषि नीति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(2014 - 2024)

शोध समस्या का प्राक्कथन :

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। औद्योगीकरण के चतुर्थ चरण में भी देश के आधे से अधिक परिवार प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। बदलते समय के साथ खेती करने की तौर तरीकों में बदलाव हुआ है लेकिन सवाल यह है कि हमारे देश के अन्नदाता की स्थिति में सुधार की क्या संभावनाएं हैं। कृषि घाटे की सौदा बना हुआ है। इस क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना करना पदाथ पड़ता है जो कृषि के विकास और क्षमता में बाधा डालती है। इस शोध में, हम भारतीय कृषि की समस्याएं और इन मुद्दों के समाधान पर चर्चा करेंगे।

- उदारीकरण के बाद, भारत में कृषक आन्दोलन का प्रकृति क्या है ?
- किसानों के उत्पादन, विपणन और वितरण की व्यवस्था का अध्ययन ?
- औद्योगिकरण के चतुर्थ चरण में किसानों की सामाजिक, राजनीतिक एवं अर्थव्यवस्था में क्या स्थिति हैं ?
- सरकार की कृषि नीति द्वारा, कृषक एवं कृषक मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ा हैं ?

शोध का अच्छादन: सार तत्व एवं क्षेत्र :

भारतीय अर्थव्यवस्था में स्वतंत्रता प्राप्ति एवं आर्थिक नियोजन के 75 वर्ष पश्चात भी कृषि क्षेत्र का सर्वोपरि महत्व है। कृषि क्षेत्र आज भी भारत में व्यवसाय और जीविका की दृष्टि से 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या और भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड बना हुआ हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 54.6 प्रतिशत आबादी कृषि और उससे संबंधित कार्यों में लगी हुई है। वर्ष 1950-51 में भारत की जीडीपी में कृषि का योगदान 51.81 प्रतिशत था जो वर्ष 2016-17 में 17 प्रतिशत रह गया। केंद्रीय सांख्यांकी कार्यालय के अनुसार वर्ष 2022-23 में कृषि और कृषि से संबंधित क्षेत्र का योगदान गिरकर 15.4 प्रतिशत रह गया। कृषि क्षेत्र में गिरावट के बावजूद इसका भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान वैश्विक औसत 6.1 प्रतिशत से अधिक हैं। कृषि और कृषि आधारित उद्योग के कारण भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का अधिमान सितारा है और जिसका विकास रुकने वाला नहीं है। भारत के कृषि अनुसंधान संस्थान के 61 वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए भारत के उपराष्ट्रपति जगदीश धनखड़ ने कहा कि सितंबर 2022 में भारत दुनिया का 5 वीं अर्थव्यवस्था बना। ये आसानी से नहीं हुआ। उन्होंने कहा की कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदंड है। इस दशक के अन्त में भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा क्योंकि हमारे एक बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है।

किसान आन्दोलन कृषि नीति से जुड़ा एक सामाजिक आन्दोलन है, जो किसानों के अधिकारों का दावा करता है । खेती ही भारत के आत्मनिर्भर होने का मूल आधार थी लेकिन अंग्रेजों ने भारत की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए भूमि व्यवस्था को बदलकर जमींदारी प्रथा आरंभ की । इससे वास्तविक निरंतर गरीब होते रहे हैं। खेती पर देश की आत्मनिर्भरता नष्ट होती गई। भारत में किसान

Rgvindra (kr.) helam
15/4/2024

Prabhu yadav
15/04/2024

आन्दोलन का लगभग 200 वर्षों का इतिहास हैं । 19 वीं शताब्दी में बंगाल का संथाल एवं नील विद्रोह तथा मद्रास एवं पंजाब में किसान आन्दोलन की राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन और स्वतंत्रता आन्दोलन का अटूट रिश्ता था। अप्रैल 1917 में नील कृषकों द्वारा बिहार के चम्पारण जिले में गांधी जी के नेतृत्व में चलाया किसान संघर्ष देश का राजनीतिक दृष्टि से पहले संगठित आन्दोलन था । अंग्रेजी शासन के किसानों के संघर्षों के देश का राजनीतिक दृष्टि से पहला संगठित आन्दोलन था। अंग्रेजी शासन ने किसानों के संघर्षों को दंगों और न्याय तथा कानून से संबंधित प्रशासनिक समस्या के रूप में देखा था । किसान आन्दोलन वही उभरे जहां राष्ट्रीय आन्दोलन के नींव पढ़ चुकी थी। उदाहरण के लिए केरल, पंजाब, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार।

वर्ष 1859-60 नील विद्रोह कृषक आन्दोलन इतिहास में अपनी मांगों को लेकर किए गए। आंदोलनों में सर्वाधिक व्यापक तथा जूझारन विद्रोह बंगाल का नील विद्रोह था । बंगाल के वें काश्तकार जो अपने खेतों में चावल की खेती करना चाहते थे, उन्हें यूरोपीय व्यापारियों द्वारा जबरन नील की खेती के लिए विवश किया जाता था। स्थानीय नेता दिगंबर विश्वास और विष्णु विश्वास के नेतृत्व में किसानों ने नील की खेती बन्द कर दी। नील विद्रोह भारतीय किसानों का पहला सफल विद्रोह था। मोपला विद्रोह 1836 में केरल के मालाबार तट पर आन्दोलन किया गया। मोपला लोग मालाबार तटीय क्षेत्र में रहने वाले इस्लाम धर्म में धर्मांतरण अरबी एवं मलयाली मुसलमान थे, जो निम्न दर्जे के किसान थे। दक्कन 1874-75 महाराष्ट्र के पुणे और अहमदनगर (दक्कन) जिलों में किसानों ने साहूकारों के खिलाफ विद्रोह किया। विद्रोह का आधार रैय्यवानी वेवस्था के अंग्रेज अधिकारियों द्वारा किसानों पर आरोपित किये गये भार कर थे। 1879 में दक्कन कृषक राहत अधिनियम द्वारा किसानों को साहूकारों के विरुद्ध कुछ संरक्षण प्रदान किए गए।

20 वीं सदी के किसान आन्दोलन 1917 के चम्पारण सत्याग्रह गांधी जी के नेतृत्व में लड़ा गया। अंग्रेजो की नीति थी, अपनी जमीन का कम-से-कम 3/20 वें हिस्से पर नील उगाने तथा बागान मालिको को द्वारा निर्धारित कीमतों पर नील बेचने के लिए मजबूर किया जाता था। खेड़ा सत्याग्रह 1918 ई0 गुजरात के खेड़ा जिले में फसलें नष्ट हो गइ, लेकिन सरकार ने भू-राजस्व माफ करने से इंकार कर दिया और इसके पूर्ण संग्रह पर जोर दिया। गांधीजी ने सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ किसानों का समर्थन किया और उन्हें सलाह दी कि जब तक उनकी मांग पूरी ना हो जाती, तब तक वे राजस्व का भुक्तान रोक दें। तेभागा आंदोलन 1946 ई० 20 वीं सदी का यह आन्दोलन बंगाल का सर्वाधिक सशक्त विद्रोह आन्दोलन था। इस आन्दोलन के कारण बंगाल की भू-राजस्व आयोग की तेभाग सिफारिशो को लागू करवाना था। इस आंदोलन के नेता कंपाराम सिंह एवं भवन सिंह थे। तेलंगना आंदोलन 1946-51 में तेलुगू भाषी किसानों का विद्रोह जमींदारों के समर्थक पुलिस और उनके गुंडों की प्रति था। 1936 में बिहार किसान सभा, आंध्र - प्रांतीय किसान सभा तथा किसान संघ को मिलकर एक अखिल भारतीय किसान संगठन बना जिसे अखिल भारतीय किसान सभा का नाम दिया गया। अखिल भारतीय किसान सभा पहला सम्मेलन अप्रैल 1936 में लखनऊ में आयोजित हुआ। स्वामी सहजानंद सरस्वती इसके अध्यक्ष एवं प्रो0 एन0 जी0 रंगा महासचिव नियुक्त किए गये। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य जमींदार वर्ग द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण से किसानों को बचाना तथा साथ ही भू–स्वामित्व की समाप्ति, राजस्व व लगान में कमी करना, मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी प्रदान करना इनकी मुख्य मांगे थीं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राज्य के संरक्षण में प्रायः सभी राज्यों में भूमि सुधार संबंधी नए कानून के निर्माण की बीच किसानों के बीच एक नये भू-स्वामी वर्ग का उदय हुआ। वर्ष 1950 में हिंद किसान पंचायत के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन की अध्यक्षीय भाषण में लोहिया ने नये परिवेश में किसान आन्दोलन के लिए निम्न लक्ष्य बताए कि जोतने वाले को तुरंत सरकारी आदेश द्वारा जमीन दी जाए,

Ravindra Kr. Thakur
15/4/2024

Prabhu yadav
15/04/2024

परती जमीन के लिए भूमि सेना बनाई जाए, छोटी मशीनों द्वारा औद्योगिकरण किया जाए, जमीन का पुनर्वितरण हो और प्रत्येक परिवार को 20 बीघा जमीन और ग्राम मिले, खेतिहर वस्तुओं और औद्योगिक वस्तुओं की कीमत में सामंजस्य होना चाहिए। पिछले तीन दशकों में सशक्त किसान आन्दोलन हुये। तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा आदि राज्यों में लाखों की संख्या में किसान अपनी मांगों को लेकर सड़कों पर निकल पड़े। बाद में उड़ीसा, राजस्थान आदि में भी किसानों ने आंदोलन किए। अस्सी और नब्बे के दशक में भारत में अनेक किसान आंदोलन हुए। किसानों के बड़े-बड़े धरने एवं रैलियां हुई। इसमें लाखों किसानों ने भाग लिया। किसानों का शोषण, कृषि उपज का उचित दाम न मिलाना, किसानों पर बढ़ता कर्ज, किसानों पर बढ़ते हुए शुल्क, बिजली के बढ़ते बिल आदि के प्रमुख मुद्दे थे। लेकिन किसानों की प्रमुख मांग पूरी होना तो दूर उनकी हालत और खराब होती गई। वैश्वीकरण की नीतियों ने उसे बड़ी संख्या में आत्महत्याओं के कगार पर पहुंचा दिया।

नेशनल एकाउंट्स डाटा के अनुसार कृषि अपने बुरे दौर से गुजर रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार प्रतिवर्ष औसतन 15,168 किसान आत्महत्या को मजबूर हो रहे हैं। इसमें लगभग 72 प्रतिशत ऐसे छोटे किसानों की है, जिनके पास 2 हेक्टर से भी कम जमीन है। पिछले दिनों देश के लगभग 187 किसान संगठन मार्ग पर अपनी मांगों को लेकर आन्दोलन करते रहे। पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में कर्जमाफी एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की मांग पर किसान संघर्षरत हैं। मंदसौर में पुलिस की गोली से छः किसानों की मौत हो गई। महाराष्ट्र में भी ऐसे ही घटनाएं हुई। भीषण सूखे और सर्वाधिक किसान आत्महत्या के बाद विदर्भ क्षेत्र मौत का गवाह बना। यवतमाल सहित इस क्षेत्र में 40 से अधिक किसानों की मौत जहरीली अवैध कीटनाशकों की वजह से हुई।

देश में जब महामारी, भूख और असमानता की तमाम परेशानियां चल रही थी उसी समय 20 सितंबर 2020 को केंद्र सरकार ने राज्यों के संवैधानिक अधिकारों में हस्तक्षेप करते हुए तीन कृषि कानून पारित किये। वे कानून थे -

- **कृषि उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) विधेयक**

सरकार की तर्क

- किसानों और व्यापारियों को मण्डी से बाहर फसल बेचने की आजादी होगी।
- राज्य के अंदर और दो राज्यों के बीच व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।
- किसानों को दाम बेहतर मिलेंगे। ऑनलाइन खरीद बिक्री होगी।

विरोध क्यों ?

किसानों को सबसे बड़ा डर है कि एमएसपी ख़त्म हो जाएगी। मण्डी में ख़रीद-फरोख्त़ पर शुल्क लगेगा जबकि बाहर बेचने- ख़रीदने पर इससे छूट मिलेगी। इससे बाहरी या प्राइवेट कारोबारियों को फ़ायदा पहुंचेगा। किसानों को सही लाभ नहीं मिलेगा।

- **कृषक (सशक्तिकरण एवं संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार विधेयक यानी कॉन्ट्रैक्ट की खेती**

सरकार की तर्क

Ravindra Kr. Thakur
15/4/2024

Prabhu yadav
15/04/2024

- कृषि उत्पादों की बिक्री, थोक विक्रेताओं, बड़े खुदरा विक्रेताओं और निर्यातकों के साथ किसानों को जोड़ने के लिए सशक्त करेगा।
- अनुबंधित किसानों को गुणवत्ता वाले बीच की आपूर्ति सुनिश्चित करना, ऋण की सुविधा और फसल बीमा की सुविधा मिलेगी।
- छोटे किसानों की आय बढ़ेगी। बिचौलियों की भूमिका खत्म होगी। आपूर्ति चैन तैयार होगी।

विरोध क्यों ?

अब निजी कंपनियां खेती करेगी और किसान मजदूर बन जायेगा। किसान नेताओं का कहना है कि इसमें एग्रीमेंट की समय सीमा तो बताई गयी है, लेकिन न्यूनतम समर्थन मूल्य का जिक्र नहीं किया गया है।

- **आवश्यक वस्तु (संशोधन) विधेयक प्रावधान यानि असेंशियल कामोडिटी ऐक्ट**

सरकार की तर्क

- इस बिल में अनाज, दलहन, तिलहन, खाद तेल, प्याज-आलू को आवश्यक वस्तु की सूची से हटाने का प्रावधान है।
- माना जा रहा है कि विधेयक के प्रावधानों से किसानों को सही मूल्य मिल जाएगा क्योंकि बाजार में स्पर्धा बढ़ेगी।
- कृषि क्षेत्र में एफडीआई को आकर्षित किया जा सकेगा। अनाज, दलहन, खाद तेल का भंडारण होगा।

विरोध क्यों ?

छोटे किसानों के आशंका है कि बड़े कारोबारी और बाहरी कम्पनियां आलू-प्याज, लहसुन व अन्य ऐसी फ़सलों का ज़्यादा भण्डारण कर कीमतें तय करेगी। इससे मनमानी-कालाबाज़ारी बढ़ेगी। किसान मजदूर बनकर रह जायेगा। ज़मींदारी प्रथा लौटेगी।

तीन कृषि कानून से किसानों के थीं पाँच बड़ी चिंताएं ?

- सरकार धीरे-धीरे एमएसपी खत्म कर देगी, जिससे किसान औने-पौने नाम पर फ़सल बेचने को मजबूर होंगे।
- मण्डी के बाहर ही फ़सल ख़रीदने के क्रम में मण्डियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।
- किसान कॉरपोरेट व पूंजीपतियों का हाथ की कठपुतली बन जायेगा।
- हर फ़सल पर क़र्ज़ लेकर गुजारा करने वाला किसान स्थाई रूप से इन कम्पनियों का क़र्ज़दाता बन जाएगा।
- कॉरपोरेट के हाथ में खेती आती जायेगी और बीज पर भी किसान का अधिकार समाप्त हो जाएगा। ख़राब फ़सल या कन्ट्रैक्ट तोड़ने पर किसान एसडीएम कोर्ट के चक्कर लगायेगा।

इस कानून के विरोध में 26 नवंबर, 2020 से शुरू होकर साल भर तक चले इस आंदोलन में

Ravindra Kr. Thakur
15/4/2024

Prabhu yadav
15/04/2024

राजधानी दिल्ली को चारों ओर से घेर रखा था। विशेषकर टिकरी बॉर्डर, सिंधु बॉर्डर और गाजीपुर बॉर्डर पर बहुत मजबूत मोर्चे लगे थे। अवधि, एकजुटता और प्रभाव के लिहाज से इस देश का सबसे बड़ा किसान आंदोलन कहा जा सकता है। इस दौरान 700 से ऊपर किसानों ने शहादत भी दी। इस आन्दोलन में संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले 500 किसान संगठनों ने हिस्सेदारी की। इसे केंद्रीय ट्रेड यूनियन संगठनों का पूरा समर्थन मिला। बल्कि यह आन्दोलन अखिल भारतीय वर्किंग क्लास की हड़ताल के साथ ही शुरू हुआ था। अचानक 19 नवम्बर 2021 को, प्रकाश पर्व यानी गुरु नानक की जयंती और देवदिवाली के दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले ट्वीट किया और उसके बाद खुद टी.वी. के परदे पर आकर ऐलान किया कि वे तीनों कृषि कानून वापस ले रहे हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र, 2014 - 2024 के मध्य कृषक आन्दोलन और केंद्रीय सरकार द्वारा लायी गयी नीतियों का अध्ययन। किसानों की आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक विकास और किसानों के उत्पादन, वितरण न्यूनतम समर्थन मूल्य, आय तथा कृषि ऋण जैसी समस्या हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही है, जैसे समर्थन मूल्य खरीदी योजना, आपातकालीन फसली योजना, पीएम किसान सम्मान निधि योजना, जल हाउस अनुदान योजना तथा प्रधानमंत्री फसली बीमा योजना आदि। हमारे शोध कार्य में उपरोक्त किसानों की समस्या और सरकार की नीतियों के अध्ययन क्षेत्र रहेगा।

साहित्य का पुनरावलोकन :

तिवारी, डॉ० अवनीन्द्र, तिवारी डॉ० प्रतिभा कुमार (2022) ; भारत की कृषि व्यवस्था एवं किसान आन्दोलन; जानकी प्रकाशन पटना, नई दिल्ली: इस पुस्तक में अवनीन्द्र तिवारी का विचार है कि कृषि प्रधान राज्यों में अधिकतर नेतृत्व मुख्य रूप से खेती करने वाले समुदायों से आया था, परन्तु 1971 के दशक के बाद राजनीतिक के नेताओं की वरीयता भी बदल गयी । जय किसान का युग लाल बहादुर शास्त्री के साथी समाप्त हो गया । भारतीय लोकतंत्र में संख्या के गणित में किसानों की आवाज को राजनीति में क्षीण किया तथा किसानों के हितों एवं जनप्रतिनिधियों के हितों के बीच दूरी पैदा की। राज्यों की राजनीतिज्ञ किसान अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को साधने में लग गए। स्थानीय स्तर पर दलीय नेताओं ने भी यही किया, जो नेता अपने को कृषक पृष्ठभूमि का बताते थे, वे शहरों में स्थापित हो गए। ये नेता कृषि संबंधी हितों से बंधे नहीं रहे, क्योंकि उनकी आय का मुख्य स्रोत कृषि नहीं रहा।

पिछले कुछ वर्षों से खर्चीले चुनाव के कारण राजनीतिक दलों ने बड़े दान दाताओं पर भरोसा करना प्रारंभ की कर दिया। धनी से धनी किसान भी चुनाव लड़ने का साहस नहीं कर सकता। अतः किसने की तुलना में इन व्यापारियों, उद्योगपतियों एवं व्यवसाययों द्वारा सरकार की नीतियों को प्रभावित करने की क्षमता बदलने लगी। परिणामतः किसान चुनावी व राजनीतिक रूप से हसिये पर चले गये। आज की जरूरत है कि कृषि क्षेत्र में और साथ ही किसानों के आर्थिक क्षमता में भी भारी-भरकम निवेश किया जाय। अगर कुछ लोगों की कुल दौलत आधी दुनिया की आबादी के बराबर है, तो इसका मतलब है कि आर्थिक प्रगति के मॉडल में परिकल्पना में हीं कोई दोष है।

प्रधान, अशोक (2021) स्वामी सहजानंद और उनका किसान आन्दोलन; नयी किताब प्रकाशन दिल्ली : अशोक प्रधान अपनी पुस्तक स्वामी सहजानंद और उनका किसान आन्दोलन में 21वीं सदी के किसानों और देश में कृषि संकट लगातार गहराता जा रहा है। कर्ज का पुराना जरिया साहूकार था और अब नया साहूकार भी बैंक के रूप में आ गया। "माइक्रो फाइनेंस" ने कर्ज लेना आसान कर दिया लेकिन सालाना ब्याज दर 24 प्रतिशत तक कर दी। सरकार ने किसानों को "नगदी फसल" के लिए प्रोत्साहित को किया लेकिन उनके उत्पाद को वाजिब दाम मिले उसकी पक्की व्यवस्था नहीं की। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि समूचे राष्ट्रीय मंच पर किसान का संकट अपने चरम पर

Ramendra Kr. Thakur
15/4/2024

Prabhu yadav
15/04/2024

हैं लेकिन संगठित किसान आन्दोलन का प्रभाव लगभग अदृश्य है। किसानों के पक्ष में बोलने-लिखने वालों पर कड़ा पहरा है। एक ओर पूंजीवादी राजनीति है जो किसानों को जाति और धर्म की अस्मिताओं में डूबोती जा रही है, दूसरी ओर कुछ प्रगतिशील बुद्धिजीवी है जो जातिवाद से उबरकर कहते हैं शहर ही भविष्य है। गांव डूबते हैं, डूबने दो। जहर जाहिर है कि विकास की तमाम दावों के बावजूद कृषि का संकट और किसानों की समस्या राष्ट्रीय राजनीति के मोर्चे पर एक बार फिर चुनौती की रहा पर खड़ी है।

सहजानंद सरस्वती को क्रांतिकारी किसान जनवादियों की पक्ति में रखने की सिफारिश की है और किसान चरित्र को उनके व्यक्तित्व का निर्णायक पहलू बताते हुए लिखा है कि सहजानंद सरस्वती को राजनीतिक तौर पर क्रांतिकारी किसान जनवादियों की पक्ति में रखना चाहिए। उनका यह किसान चरित्र ही उन्हें बेबाक, जुझारू और वामपंथी बनाये रखता है। ठोस व्यवहार की कठोर संघर्ष भूमि पर स्थित रहने की उनकी विशिष्ठता उन्हें अन्य किसान जनजावादियों से भी अलग कर देती है; अन्य किसान जनवादियों की विपरीत वे किसान समाजवाद के मनोरम सपनों में खो नहीं जाते, अपितु हर मोड़ पर प्रगतिशीलता का परिचय देते हैं।

शाह, घनश्याम (2015) : भारत में सामाजिक आन्दोलन ; रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली ; घनश्याम शाह का विचार है कि भारत में बुनियादी तौर पर दो प्रकार से किसानों का ध्रुवीकरण हुआ हैं। एक जो निर्धन कृषक श्रमिक और सीमांत किसान है। दूसरे वे धनी मलिक किसान है जो अत्यधिक अनाज उत्पन्न करते हैं। ये धनाडे किसान पूंजीपति है जो कृषकों का शोषण करते हैं । उनके खेत बटाई पर चलते हैं अथवा दैनिक कार्य करते हैं ।

समकालीन भारतीय समाज में किसान आन्दोलन राजनीतिक दलों के द्वारा चलाए जा रहे हैं। इन राजनैतिक दलों का सिद्धांत, शोषण एवं अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना हैं । ये किसान सभा, सी०पी०आई०एम०एल के द्वारा मुख्य आन्दोलन चलाए जाते हैं । इनका कार्य स्थल वहां है जहां उनकी सरकारें हैं अथवा सरकारें रही है अथवा जहां इनके दल का प्रभाव है - जैसे केरल, बंगाल, त्रिपुरा। दूसरे प्रकार के ग्रामीण किसान आन्दोलन है जो भारतीय किसान संघ द्वारा संचालित होते हैं। विशेष तौर से इनका परिश्रमी उत्तर-प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में काफी प्रभाव हैं। इन प्रदेशों में किसान आन्दोलन काफी बड़े स्तर पर हुए हैं। इनके द्वारा चलाए गए किसान आन्दोलनों की एक यह भी विशेषता रही है कि यह किसानों के हित और कल्याण की तो बात करते हैं लेकिन खेतिहर भूमिहीन, निर्धन श्रमिकों की उपेक्षा करते हैं। समकालीन किसान आन्दोलन की यह भी एक विशेषता है कि देश के सभी राज्यों में किसान आन्दोलन के मुद्दे अलग-अलग होते हैं। ब्रिटिश शासन के दौरान जो किसान आन्दोलन होते थे उनके लक्षण सामंतवादी और साम्राज्यवादी व्यवस्था की विरुद्ध थे। स्वतंत्र भारत में किसान आन्दोलन क्षेत्रीय एवं स्थानीय समस्याओं को लेकर किए जाते हैं। ये केंद्रीय अथवा राज्य सरकार की किसान विरोधी नीतियों के तहत किए जाते हैं।

त्रिपाठी, अरुण कुमार (2022) : अपनी पुस्तक संकट में खेती आन्दोलन पर किसान ; वाणी प्रकाशन नई दिल्ली : भारत में साल भर तक चले किसान आन्दोलन ने देश और दुनिया को इस बात का एहसास कर दिया है कि कृषि संकट गंभीर है। दुनिया का कॉरपोरेट जगत जितना धन आर्थिक साक्षरता पर खर्च कर रहा है उतना ही धन उसे खेती को समझने में खर्च करना चाहिए । यह कहना आसान है कि किसान नई प्रौद्योगिकी और सुधार को नहीं समझते लेकिन उसी के साथ यह भी सच है कि बड़े शहरों में बैठकर कानून और योजनाएं बनाने वाले देश के गांवों को नहीं समझते। अगर समझते तो इतना बड़ा आन्दोलन ना होता। खेती में सुधार की जरूरत है, लेकिन वह सुधर न तो किसानों से जमीनें लेकर किया जा सकेगा और नहीं भारी मशीनों, महंगे बजो, न की महंगी उर्वरक पर होना चाहिए। खेती की भारी लागत और उससे होने वाले उत्पादन का उचित मूल्य न मिलने के कारण

Rajendra Kr. Thakur
15/4/2024

Babbu yadav
15/04/2024

किसान कर्जदार बनते हैं और आत्महत्या करते हैं। अगर खेती के संकट को मिटाना है तो सरकार और किसानों के बीच निरंतर संवाद होना चाहिए और दोनों नये विकल्पों पर सूचना चाहिए।

हरजिंदर (26 फरवरी 2024) : किसानों के किन्नू और शेयर बाजार : समाचार पत्र हिंदुस्तान ; लेखक का कहना है कि जिस प्रकार से सर्किट ब्रेकर आम निवेशक को बाजार की निर्दयता और सट्टेबाजी से बचाना होता है। उसी प्रकार बाजार के सुधारों का ऐसा ही सिलसिला कृषि मंडियों के लेकर भी चलाए जाने की जरूरत है, जिनके केंद्र में यह चिंता हो कि किसानों के आर्थिक हित सुरक्षित रहने चाहिए। कृषि के मामला हमारे लिए कई तरह से शेयर बाजार से बहुत ज्यादा अहमियत रखता है। देश की 58 फ़ीसदी आबादी अभी भी कृषि पर निर्भर है। जब आप किसानों के हितों की चिंता नहीं करते और उन्हें निर्मम बाजार के भरोसे छोड़ देते हैं, तो आप दरअसल देश की 58 फ़ीसदी आबादी की अनदेखी कर रहे होते हैं।

वी० कुमार स्वामी ने द हिंदू (24 जून, 2019) : आलेख में विश्लेषण किया कि कृषि नीति से कृषि संकट को कैसे कम किया जा सकता है। उन्होंने भारत में वर्तमान कृषि संकट के लिए दो कारणों को दरसाया हैं। उसे समय को पहचानने में लापरवाही जब हरित क्रांति कम होने लगी और सहायक विकल्पों के साथ कदमताल करने लगी; और सब्सिडी के आर्थिक प्रभाव को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने भारत के वर्तमान कृषि संकट का संक्षेप में वर्णन इस प्रकार किया-मिट्टी की उर्वरता में कमी, गिरता जल स्तर, लागत में वृद्धि, किसानों को कम लाभ और प्रमुख वस्तुओं की कीमतों में अप्रभावी अत्यधिक उछाल तथा अत्यधिक अतिरिक्त उत्पादन, जो सड़कों पर डंप किया जाता है और इसके कारण कई किसान बर्बाद हो जाते हैं सरकार पर भारी बोझ पड़ता है।

शोध उद्देश्य

- कृषक समस्या और कृषि नीति से होने वाले आन्दोलन को स्पष्ट करना।
- उदारीकरण का कृषकों पर आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभावों का पड़ताल।
- सरकार की कृषि नीति द्वारा, कृषक एवं कृषक मजदूर पर प्रभाव।
- हरित क्रांति के अंतर्गत उन्नतिल बीजों, उर्वरकों का कृषि उत्पादों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- वर्ष 2014 के बाद सरकार द्वारा लाये गए किसान कानून के विरोध में हुए आन्दोलन के कारण और परिणाम का मूल्यांकन।

शोध परिकल्पना :

- कृषक आन्दोलन कृषि नीति को प्रभावित करता है।
- वैश्वीकरण के दौर में कृषि नीति पर कृषक संगठनों का प्रभाव।
- भारतीय कृषि व्यापार पर उदारीकरण का प्रभाव।
- औद्योगिकरण के चतुर्थ चरण में किसानों की आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक विकास।

प्रस्तुत शोध कार्य का अनुशासन एवं अनुशासन के लिए योगदान :

प्रस्तुत शोध कार्य में कृषकों की समस्या एवं कृषक आन्दोलनों तथा कृषि नीति को परिभाषित

Ravi [signature] 15/4/2024

Babbu yadav 15/04/2024

एवं वस्तुनिष्ठ रूप से योगदान देंगे। भारत में कृषक आन्दोलन और कृषि नीति शोध कार्य से राजनीतिक विज्ञान के साथ कई विषयों में उपयोगिता को दर्शाती हैं। भूगोल विषय में कृषि नीति का प्रभाव देखने को मिलता है। कृषि शिक्षा के माध्यम से किसानों को खेती से संबंधित ज्ञान विज्ञान में बढ़ोतरी हुई है। जिसे अच्छी सिंचाई एवं उच्च कोटि की बीजों से कृषि पैदावार में बढ़ोतरी हो रही है। पीएम किसान निधि एवं फसल बीमा योजनाओं के माध्यम से किसानों के स्थिति में सुधार की संभावना दिख रही हैं। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में देखे तो कृषि से जीडीपी में लगभग 14 प्रतिशत का योगदान वर्तमान समय में रहा है। कृषि उद्योगों से रोजगार सृजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में कृषि का एक अलग ही पहचान है। भारत के लोगों कृषि को एक त्यौहार के रूप में मानते हैं। यहां हर मौसम के हिसाब से कुछ त्योहार होते हैं और हर क्षेत्र में उस त्यौहार के कुछ खास पकवान बनते हैं, जो उसे मौसम से लड़ने के लिए शरीर को ताकत देती हैं। भारत के अलग-अलग हिस्सों में पोंगल, बिहू, लोहड़ी, खिचड़ी तथा मकर संक्रांति जैसे त्योहार मनाए जाते हैं। जो भारतीय समाज को शांति सौहार्द एवं आपसी भाईचारा बनाने में सराहनीय योगदान हैं। इतिहास की दृष्टि से देखे तो पूर्व में घटी कृषक संकट, कृषक आन्दोलन एवं कृषि नीतियों से भविष्य के लिए एक बेहतर कृषि नीति निर्माण किया किया जा सकता है। जिससे किसानों की स्थिति बेहतर की जा सकती हैं। इस प्रकार से कृषक और कृषि नीति का प्रभाव अन्य विषयों पर प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता हैं। इस प्रकार से कृषि है तो अन्न है, अन्न है तो मानव का अस्तित्व हैं। अतः यह कहने में कोई संदेह नहीं की कृषि मानव का जीवनधार हैं।

शोध पद्धति :

प्रस्तुत शोध कार्य में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक पद्धति के आधार पर संपादित किया जाएगा। साक्षात्कार के आधार पर विश्वसनीय तथ्यों का संकलन किया जाएगा। अंग्रेजी और हिंदी भाषा में प्राप्त प्राथमिक एवं सहायक ग्रंथ तथा समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं की सहायता ली जाएगी। शोध के लिए एकत्र सामग्री की मदद से निगमनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों व्यापक सांख्यिकीय डेटा, इन्टरनेट, शोध पुस्तकों का बड़े पैमाने पर इस शोध पत्र का प्रयोग किया जाएगा।

कार्य प्रारूप: अस्थाई योजना :

प्रस्तावित शोध प्रबंध में अध्ययन का योजना निम्नलिखित रूप में अपेक्षित है।

	परिचय
प्रथम अध्याय	कृषक आन्दोलन एवं कृषि नीति का ऐतिहासिक विकास
द्वितीय अध्याय	वैश्वीकरण के संदर्भ में कृषक आन्दोलन मुद्दे एवं विमर्श
तृतीय अध्याय	औद्योगिकरण के चतुर्थ चरण में किसानों की दशा एवं दिशा
चतुर्थ अध्याय	वर्तमान सरकार द्वारा कृषि विकास हेतु उठाये गये कदम
पंचम अध्याय	निष्कर्ष एवं सुझाव

Ravindra Kr. Thakur
15/4/2024

Prabhu yadav
15/04/2024

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

रिपोर्ट :

- कृषि एवम् सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार (वार्षिक रिपोर्ट) 2023.
- 11 वीं कृषि संगणना (Agriculture Census); 2022.
- योजना आयोग (2007-2012) ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना।
- भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन का परिशिष्ट (2009).
- अल्बर्ट क्रिस्टोफर दास (2009) : आग्रिकल्चर क्राइसिस इन इंडिया: द रूट कॉज एण्ड कंसिक्वेंसेज।

पुस्तक :

- डॉo अवनीन्द्र कुमार तिवारी, डॉo प्रतिभा तिवारी (2022) ; भारत की कृषि व्यव्स्था एवं किसान आन्दोलन; जानकी प्रकाशन, पटना. दिल्ली।
- शाह घनश्याम (2015) : भारत में सामाजिक आन्दोलन; Sage Publication India Pvt.Ltdl.
- प्रधान अवधेश (2021) : स्वामी सहजानन्द और उनका किसान आन्दोलन; नयी किताब प्रकाशन, दिल्ली।
- डॉo त्रिपाठी दिवाकर (2023) : आधुनिक भारत और किसान आन्दोलन का इतिहास; Koshal Publications Pvt. Ltd।
- भादुड़ी अमित (2022) : भारत में परिवर्तन राजनित का उभरा चेहरा: किसान आन्दोलन; आकार बुक्स नई दिल्ली।
- त्रिपाठी, कुमार अरुण (2022) : संकट में खेती आन्दोलन पर किसान; वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली।
- प्रोo सिंह, विजयेन्द्र पाल एवं डॉo निगम, रामेश्वर (1974-75) : कृषि अर्थशास्त्र; नवयुग साहित्य भवन लोहा मण्डी, आगरा।
- शर्मा वैष्णव, सिंहल (2007) : विकास का अर्थशास्त्र एवं नियोजन; साहित्य भवन आगरा।
- कृष्णराज, मैत्रेयी और कांची, अरुणा. (2014) : भारतीय महिला किसान. भारत; राष्ट्रिय पुस्तक न्यास।
- भल्ला, एस. जी. (2014) : भारतीय कृषि आज़ादी के बाद (कुमार रजनीश Trans 2nd ed.). भारत; राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
- मार्क्स, काल. (1887) : केपिटल: ए कृटीक ऑफ़ पॉलिटिकल इकॉनमी, वोल. ।।।, प्रोसेस ऑफ़ प्रोडक्शन ऑफ़ कैपिटल (Trans. एंजेल्स फ्रेडरिक). मोस्को : प्रोग्रेस पब्लिशर. Pp.

Ravindra Kr Jhakhi
15/4/2024

Babbu yadav
15/04/2024

723.

- सिंह, हीरा प्रसाद (1973) : भारत में किसान आन्दोलन (1917-1940) (मुख्यत: बिहार में) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० राजनीति शास्त्र शोध-प्रबन्ध।
- वर्मा, नेहा (2020) : भारत में किसान आन्दोलन और बदलता स्वरूप – 1990 से वर्तमान तक; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली.

आलेख :

- हरजिंदर (26-02-24) : किसानों के किन्नू और शेयर; समाचार पत्र, हिंदुस्तान।
- शशि शेखर (18 फरवरी 20024) : अकेले किसान दुखी नहीं; समाचार पत्र हिंदुस्तान।
- श्रीस्ताव, अर्चना (Oct 2010) : भूख की भयावह होती आग; योजना, अक्टूबर 2010.
- बोरठाकुर, अन्वेषा. और सिंह, प्रदिप. (2012). एग्रीकल्चर रिसर्च इन इंडिया : एन एक्स्प्लोरिट्री स्टडी. गुजरात : इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशल एंड इंटरडीसीप्लेनेरी रिसर्च, Vol. 1(9). Pp . 471-483.
- निरक्षर अमित. (2018). ए स्ट्रगल फार फ्रॉम ओवर. इपीडब्ल्यू, Vol 53(32).
- डॉo राजपूत, ओ. पी. (जून 2001) : राष्टीय कृषि नीति, प्रतियोगिता दर्पण।
- मोदी, अनिता (2011) : भारत में कृषि चुनौतियां एवम् समस्याएं, योजना।
- डॉo झुनझुनवाला, भरत (19 SEP 2007) : कृषि-क्षेत्र की कमज़ोरी; समाचार पत्र – दैनिक जागरण
- Saha Debottam, Nanduri Kranthi & Das Raya, February 9, 2021– Farmers' Protest in India : A Manifestation of Rural Agrarian Crisis, by Juan Liu.
- डॉo पटेल, सुधीश कुमार : "कृषि में हरित-क्रान्ति का ताना-बाना", Productivity News (National Productivity Council),Vol. 46No. 4, July -August, 2008.

Ravindra Kr. Thakur 15/4/2024
पर्यवेक्षक का हस्ताक्षर

Boddhu Yadav 15/04/2024
शोधार्थी का हस्ताक्षर

Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga
20.04.24

MBVerma 20.04.2024

20/4/24

20/4/24

20.4.24